धरती पर सम्पूर्णता की जनक बन उभरी-दादी

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक

देशों को अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। अपने मन मस्तिष्क को आध्यात्मिक प्रयोगशाला बना,उसका प्रयोग इस जगत के मानवों को जीवन की सही राह दिखाने वाली एक दूरांदेशी, लाइट हाउस दादी जानकी को उनके इस धरा पर इस अमूल्य देह के सौ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में कोटि-कोटि बधाइयाँ।

दादी जानकी एक सम्पूर्ण अभ्यासी महिला हैं जिनका जीवन उनके कर्म से बोलता है, जिन्होंने 20वीं शताब्दी में एक महान परिवर्तन की नींव रखी। आप शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की एक मिसाल हैं। आपका हर कार्य प्रायः समझ पर आधारित होता है। यदि हम इसे कहें कि आपकी सोच एक सुरक्षित स्वास्थ्यकारी मानवता का भविष्य निर्धारित करती है तो कोई आत्माओं को हीलिंग देना है।

सेवा की विहंगम दृष्टि

दादी की जीवनी की झलक अगर हम देखें तो उन दिनों दादी को जो पहली सेवा मिली जो बीमारों की सेवा थी, जो उनके जीवन को तीव्रता प्रदान करने वाला क्षण था। उनकी प्राथमिक शिक्षाओं में प्रमुख रूप से भारतीय ग्रन्थ थे जिसको उन्होंने बड़े दिल से समझा और आत्मसात किया। 12 साल की उम्र से आपने इस श्रृंखला

कि कैसे परमात्मा से जुड़कर दूसरों को भरपूर किया जा सकता है। निःस्वार्थ और दिल से सेवा करना लोगों को शक्तिशाली बनाने के लिए अति आवश्यक है। सम्पूर्ण स्नेह से लोग हमारे विचार, हमारे शब्द और हमारे कर्म को समझ पाते हैं। दादी का कहना है कि उन्होंने ब्रह्माबाबा से दूरांदेशी (फॉर साइटेडनेस) बनकर धर्म, पंथ, समाज से उपर उठकर खुशी और हर तरह के स्वास्थ्य को

आत्ि ा-श्या व्ि ात्ा ा नहीं हाग्े ा।r

आप 1916

को पूरी तरह से विकसित किया कि

लोगों को देना सीखा।

में एक सिंधी, धनाढ़य व जनकल्याणकारी परिवार जो वर्तमान समय पाकिस्तान (सिंध) का हिस्सा है में पैदा हुई, जो आज ह०जारों ह०जार के विवेक को जागृत करने की प्रेरणाश्रोत बनीं। आपको देखकर आज सभी अपना जीवन खुशी से भरपूर और स्वास्थ्यकर बनाने की प्रेरणा लेते हैं। आपके बारे में एक बात और हम कहना चाहेंगे कि आप ही हैं जिन्होंने वैश्विक स्तर पर भावना और उससे उभरने वाली बीमारियों की

कै से अपने आपको आध्यात्ि मक चत्े ाना के आधार से जीवित रखना है। आंतरिक खुशी से कैसे शारीरिक दर्द से बाहर आया जाता है, इसे आपसे अच्छी तरह से सीखा जा सकता है। दादी के पास जब भी काइे र् एस्े ा पारि वार मिलने आता, उनमें से चाहे कोई उनका रिश्तेदार ही क्यों न हो, उन सभी को उनसे परमात्मा की झलक और बहुत हल्केपन की फीलिंग आती है। प्यार और सहानुभूति की जैसे वे प्रतिमूर्ति हैं।

दादी खुद प्रयोगशाला दादी का अपना जीवन खुद ही प्रयोगशाला है, जिसको उन्होंने अपने मन-मस्तिष्क में बना रखा है और अपने आध्यात्मिक तकनीक से वे अपनी बीमारियों पर विजय प्राप्त कर लेती हैं। उनका कहना है कि परमात्मा की पहचान और समझ के आधार से सकारात्मक कर्म होते हैं और व्यक्ति अच्छे जीवन की तरफ बढ़ता है और समाज को सुदृढ़ बनाने में सकारात्मक योगदान भी देता है।

अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। आध्यात्मिक और

जी ने प्रथम में सम्बोधन भाषण दिया था। इसी श्रृंखला में सेन फ्रान्सिसको

गहराई में जाकर सबको अवगत

दादी ने जो सीखा वो परमात्मा से

6 दशक की उपलब्धि

धार्मिक नेताओं से भरा हुआ, सन

में 1996 में स्टटे

आप्@ ा वर्ल्ड कान्@ फ्रे न्स

कराया। आज बीमारी सिर्फ शारीरिक

ही नहीं है, बल्कि उसका एक स्तर मानसिक भी है। इनका दृष्टिकोण ना सिर्फ स्वास्थ्य को गति देना है बल्कि व्यैक्तिक स्तर पर पूरे विश्व की

दादी जानकी संस्था के संस्थापक

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के बारे में कहतीं कि मैंने ब्रह्माबाबा से शक्तिशाली, व्यवहारिक, आध्यात्मिक जागृति का पाठ पढ़ा। उन्होंने सिखाया

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने

स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को

1996 में यूनाइटेड नेशन कॉन्फ्रेन्स जो इस्ताम्बुल में हुई थी, जिसमें विश्व भर के प्रख्यात आध्यात्मिक और धार्मिक नेतायें आये थे, उसमें दादी

में भी दादी जी ने हिस्सा लिया था, इस कॉन्फ्रेन्स में वहां के तत्कालिन राष्ट्रपति तथा लगभग 600 से भी अधिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मुलाकात के दौरान दादी जानकी के साथ प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी। श्री श्री रविशंकर जी के साथ स्नेह मिलन करते हुए

दादी जानकी। अरब देश के सम्मानित प्रतिनिधियों के मध्य दादी जानकी।

एक ऐसी युक्ति जिससे होगा कल्याण

हमारी नवीनता से लोगों को मिलेगी नूतनता

काल्ि ायग्ु ा के आं त्ि ाम चरण म,ें

अज्ञान रूपी रात्र्ि ा म,ें

जब परमाप्ि ाता

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत

दूसरे का दुःख दूर नहीं कर सकती हूँ।

करके योग्य बनाना।

परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होते हैं तब वे मनुष्यमात्र को यह शिक्षा देते हैं कि - ``काम-वासना का भोग एक

जीव-घातक विष लेने के सामन है जिससे कि मनुष्य का जन्म-जन्मान्तर का सर्वनाश होता है। अतः ज्ञान रूपी सोम अथवा अमृत निराकार परमात्मा शिव, जिन्हें ही `सोमनाथ' और `अमरनाथ' भी कहा जाता, इस संसार सागर से सारा विष हर लेते हैं। इसी कारण उन्हें `विष-हर' भी कहा गया है। परमात्मा शिव के उसी कर्त्तव्य की स्मृति में आज भ्ा लोग

जब शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं तब ब्रह्मचर्य व्रत का पालन

अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है,

सबसे बड़ा फायदा कि कोई और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। उपर-उपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती। शंख जो होता है वह सागर की रचना है इसलिए उसका आवा०ज कितना

लाइट रहने से आरै ो ं को लाइट अनभ्ु ाव हाग्े ा।r

हल्कापन लगेगा। 5 हो या 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है।

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है इसलिए क्यों न कहो। आयी है पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है।

बाबा के काम का

योग्य बनाना, मैं इस काम के लिए हूँ क्या? अरे, क्या

भाषा बोली? सम्भल दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

के बोलो क्योंकि स-

ंगमयुग पर एक-एक बोल अमूल्य है। ऐसे बाबा का एक-एक बोल अनमोल है, ऐसे हमारी भी बहुत वैल्यू है। जो पुरूषार्थ करना

करते हैं। वैसे भी जो शैव लोग प्रसिद्ध

दूर-दूर तक गूंजता है। विचार सागर मंथन

कई हैं जो डाव्@ ाट।

र आरै

दवाइयाँ बदलते रहते

है, अब करना है, मुझे करना है, समय करा

पाशुपत व्रत रखते हैं तो वे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। जो मनुष्य 12 वर्ष तक निरंतर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे पाशुपत व्रत का बहुत फल मिलता है- ऐसी शैव लोगों की मान्यता है। पाशुपत व्रत रखने वाले शैव लोग ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने

- ब्र॰ कु॰ गंगाधर

से लगेगा यह सागर की रचना है। कोई और

बात का विचार न अपने लिये आता है, न किसी और के लिए आता है। शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं। सोचने में नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरी दिल होती है आप भी ऐसे बार-बार मीटिंग नहीं करो,

क्या ०जरूरत है! फ्री रहो। हाँ, फैमिली

हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं

होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

बाबा कहता है कोई बोझ हो, कोई संकल्प हो तो तुम सिर्फ मुझे दे दो, ताकि

तुम साफ रहो। साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे।

रहा है, बाबा करा रहा है। कोई बड़ी बात

नहीं है। गुप्त पास विथ ऑनर में आना है। क्या समझा है? कोई समझे ना समझे ल- ेकिन बाबा तो समझता है ना। अगर हम ख०जानों को सम्भाल के नहीं रखते हैं तो उसे प्राप्ति की कदर नहीं होती है। जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही थोड़ा भी हमारे अंदर किचड़ा होगा तो औरों

के अतिरिक्त, शिव की याद में रहने का अभ्यास करते हैं तथा

जो वस्तुएँ उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं उन्हें शिव को अर्पित करते हैं और शिव की सेवा में रहने का पुरूषार्थ करते हैं- उपरोक्त बातें मुख्य रूप से उनके व्रत में शामिल हैं।

फीलिंग की मीटिंग ०जरूरी है क्योंकि परिवार है।

विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल

जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को

माया छुयेगी भी नहीं, पर कर्मभोग, थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ,...परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात

को बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म अंदर बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबीन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन या तन का, तो वो इधर-उधर नहीं फें को वय्ो ािो ं व्ि ा यह भी ईश्वरीय कायदे हैं ना। ईश्वरीय

वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है

प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है, अगर हम

है। तो ऐसे एक दो से सीखने की भावना हो,

कायदे पम्र् ाण चलो तो सब ठाव्ी ा ह।ै

आजकल

अब विष को छोड़कर शिव से प्रीति जोड़ो!

उपर हमने `रात्रि' का जो अर्थ बताया है, उससे स्पष्ट है कि

अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरूषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ्राकदिल

तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे से किसी को तकलीफ हो, न मेरे को

दुनिया में लव का दिवाला है, न लव देना जानते हैं न लव लन्े ा जानते हैं वह कायदो स्ि ार

अब कलियुग का जो अन्तिम चरण चल रहा है, यह सारा काल

है उसका फायदा लो। विचार सागर मंथन

तकलाप्र ा हा।े

ाव्ि ासी को शान्ि त पम्े्र ा भले ाम्ि ाल,े

क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते

`रात्रि' अथवा `महारात्रि' ही है। हम सभी नर-नारियों को यह

जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर

ाज्ि ातना ाम्ि ाले पर थाडæे

ा भी काइे र् मरे ा एक शब्द

हैं। मैं शरीर छोड़ूँ तो क्या याद करेंगे, थी

शुभ-संदेश देना चाहते हैं कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ज्ञानामृत पिला रहे हैं और वास्तविक सहज राजयोग भी सिखा रहे हैं। चूंकि कलियुगी

सृष्टि के विनाश में ब्ाकी थोड़ा समय है, इसलिए अब हम

मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर ०जरा भी मैं दुःख

महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं

या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा।

तो बाबा यह विधि सिखाता है, महिमा

तो अच्छी परत्ं ाा.ु ..यह नहीं चाहि ए, वो यादगार नहीं है। तो दातापन के संस्कार इमर्ज करके ब्राह्मणों को स्नेह और सम्मान से प्यार दो और अपने से आगे रखो।

सबका कर्त्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान-सेवा

बाबा का संकल्प, हमारा हो कायाकल्प

करें। वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्य को चाहिये कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमपिता परमात्मा शिव से वह अपना नाता जोड़े। वास्तव में शिवरात्रि केवल एक दिन नहीं होती बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान-रात्रि में

दादी हृदयमोहिनी अति.मुख्य प्रशासिका

अभी सभी बाबा की

याद में बाबा की बातें सुनने के लिए इकùे हुए है। अभी सबके सूरत में बापदादा की याद दिखाई दे रही

बाबा ऐसा मुस्कराता है जैसे सामने से ही

देख रहा है और हमारे भाग्य को उदय कर रहा है।

बाबा कहता है बस, चलते-फिरते कुछ भी करते मुझे याद करो। और याद

कितनी मीठी है बाबा कहने से ही मुख मीठा

सुनें और सब कुमार या अधरकुमार भाई

सब उमंग-उत्साह से बाबा का एक-एक बोल सुन रहे हैं लेकिन धारण करके उस पर चलने का दृढ़ संकल्प भी कर रहे हैं।

तो आप सभी भी किसकी याद में बैठे

हो? मीठे बाबा, प्यारे बाबा की। ऐसे मीठे

अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, यह सारा समय ही शिवरात्रि है जिसमें

कि मनुष्यात्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए, शिव परमात्मा की स्मृति में स्थित होना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य व्रत का सहर्ष पालन करना चाहिए। शिवरात्रि का त्योहार मनाने की यही सच्ची रीति है।

शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है

है और हरेक को कितनी खुशी है क्योंकि बाबा कहता है कि खुशी जैसी खुराक और है ही नहीं। अगर खुराक खाना है तो खुशी, तो आप सब तो सदा खुश रहते ही हैं। तो आप खुराक खाते ही हैं, आज देखो बाबा की मुरली का ही वर्णन कर रहे हैं। बाबा ने कितनी अच्छी समझानी दी है, बाबा कहते

हो जाता है। तो आज भी हम सभी मिलके बाबा की याद में बैठे हैं और बैठ करके जो बाबा का संकल्प है कि इस दुनिया में यह पता पड़े कि हमारा बाबा कौन? और बाबा क्यों आया है, वो हम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं वो भी बाबा रे॰ज देखता है। तो आप सभी भी आज बाबा के आगे बैठे हैं, यह तो

बाबा को याद करने से अंदर का कड़वापन आपेही निकल जायेगा। बाबा की हरेक बच्चे प्रति यही शुभ आश है कि यह मेरा एक- एक बच्चा बाप समान बनके निर्विघ्न रहे, रहते भी हैं और रहेंगे भी लेकिन एक-एक बच्चा विश्व कल्याण के कार्य में सदा मग्न है भी और सदा मग्न रहेंगे। तो बाबा आप

चां व्ि ा ाश्ि ाव ही ज्ञान के सागर, शान्ि त के सागर, आनदं

के सागर,

हैं कि आप बच्चे जब यहाँ हॉल में बैठते हो

भाग्य है जो जब बाबा चांस देता है अपने

सबकी शक्तें देख करके प्यार कर रहा है,

प्रेम के सागर, परमपिता परमात्मा हैं, जोकि कलियुग के अंत में पशु-तुल्य आत्माओं को माया के पाशों से छुड़ाकर मुक्त करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मनुष्य को देवता बनाते तथा सतयुगी पावन सृष्टि की पुनः स्थापना करते हैं, इसलिए `शिव जयंती' ही सर्वोत्तम त्योहार है। यह सभी

तो उस समय आपकी बुद्धि में क्या आता है? अभी बाबा आया कि आया, बाबा के महावाक्य सुनने के लिए आये हैं। तो सबकी बुद्धि में बाबा के शब्द स्मृति में आते ही रहते हैं और इस स्मृति में रहने से कितना सुख

सामने बैठके सुनने का और हम लोगों को भी कितना अच्छा लगता है, जब बाबा के सामने बैठते हैं और बाबा बोलते हैं तो ऐसे लगता है जैसे एक-एक शब्द बाबा का मेरे लिये स्पेशल है और मुझे ऐसा बनना है,

वाह बच्चे वाह! कितना प्यार से सुनते हैं और प्यार से सुनते प्यार को दिल में समाते भी हैं और दिल में समाने से कभी भी देखो तो

बाबा का प्यार ही दिखाई देता है, ऐसे है ना।

आत्माओं के परमपिता का जन्मोत्सव है जिसे सभी देशों में

आरै

शां त्ि ा का अनभ्ु ाव हात्े ा ह।ै

ास्ि ार्फ साच्े ाने

दूसरे तरफ बुद्धि नहीं जाती है। अपने तरफ

आजकल की मुरली का सार क्या है?

धूमधाम से मनाया जाना चाहिये। चूंकि शिव ही कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय सभी मनुष्यों का

से ही कितना अंतर पड़ जाता है तो आप

सोचो, सोचने के बजाए जब हम वो रूप बन

ही जाती है तो कितना मीठा अनुभव होता

है। अभी आज भी उसी अनुभव को हम

बाबा कहते हैं कि बस, कुछ भी करो मुझे

याद ़जरूर करो क्योंकि पाप कटने के लिए

जीवन कौड़ी-तुल्य से बदल कर हीरे-तुल्य बनाते हैं, इसलिए

जाते हैं तो ाव्ि ातनी खश्ु ा की बात! आरै

सदा

रिपीट कर रहे हैं और ादिल में वाह बाबा,

तो बाबा की याद ही चाहिए ना। तो हमारे

शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है, परन्तु आज स्वयं भारतवासी

यही कोशिश करनी है कि जिस समय भी

वाह बाबा वाह! की समृति कितनी प्यारी है,

ाव्ि ातने जन्मों के पाप इकþे हैं आरै

ाप्ि ार अभी

भी शिवरात्रि के इस महात्म्य को नहीं जानते तो और देशों के लोग भला कैसे जानेंगे...!

हम बाबा की बातें सुनाते हैं तो उस समय

ऐसे लगे जैसे बाबा हमारे में सम्मुख हा॰जर ना॰जर होके अपनी याद दिला रहा है। और

आपके भी अंदर बाबा आ गया ना। आप भी

यही समझते हैं कि बाबा हमारे द्वारा बोल रहा है, तो अभी चलो बाबा के महावाक्य

बाबा के याद में सब खत्म हो रहे हैं।

महाशिवरओमा त्रि2ा0

सज्ृ ानकर्त्ता ाश्ि ाव के काल्ि ायग्ु ा की महारात्रि के समय अ- वतरण की याद में मनाई जाती है - महाश्ि ावरात्र्ि ा। यों तो प्रत्येक पर्व का अपना-

`महापर्व' की

शिव

ंजहर पीने पुनः आ

भोपाल-म.प्र.। मध्य प्रदेश के राज्यपाल

अपना महत्व है तथापि शि-

वरात्रि तो सभी पर्वों की भी मानो जननी है। शिव भारत

गये हैं

रूपवास-राज.। राजकीय माध्यमिक विद्यालय एक्टा के विद्यार्थियों को

`ाज्ाी rव्वान्ाथमाूल्यताो'े ल्पारावस्ाम्प्ब्ारासि्धिद्धत व्हारान्विवदे बाद स्वोमप्ूहाशच्चित्रात्ा् मझर्ा्ें ब्वा्र.स्वीय्ु.ा स्वोक्नाव्अा,ों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. अवधेश। साथ

व असुरब्ा्र.ें व्नाे.स्गाा्ग्ातारा त्मथंथान्शि ाक्ष्विक्ाय्ागाण्।ा।जब ॰जहर

में आते ह।ैं

उनका जन्म नहींफरीदाबाद-हरियाणा।ख्वत्तिध्मायहावुD ानागहेन्दै,बाढ़शिन्वा व्साव्े ाDयां ेम्जशागानित्नाम्े ाDीडिय्या प्हात्रिं,ाका निकला तो सबने शिव का स्मरण किया कि

होता, क्योंकि वे जन्म मरणभस्ेंटो व्नग्राम्रा rाहडिय्ैं।ा व्वो गाDतिाब्विध्जियााग्ें ासो।े Dपाव्राग्नत्ताव्अराबातेDहाएणपब्वा्र.वो.सश्दांभान्वाथ्े,ल्बिए्र.कु. वे ही ॰जहर पान कर सकते हैं। वो ॰जहर

परकाया प्रवेश करते हैं, वे हवी सैशार्ल्यअा ावात्Dमान्Dया।ों

जागना है। आप सोचेंगे कि ये कैसे होगा?

और कुछ नहीं, पांच विकारों का ०जहर ही

में परम हैं इसलिए परम आत्मा हैं। उनका

जैसे हम सदा के लिए जाग गये हैं, वैसे ही

ह।ै

ये ावृि ाकार बडæ

े ावृि ाष हैं जो जाव्र ान को ज्० ाह-

ही दिव्य कर्त्तव्य है नव सृष्टि की रचना

आपको भी जागना होगा। ये जागना है -

राल्र ा बना दत्े ो ह,ैं

सम्बन्धों को ज्० ाहराल्र ा बना

करना, दःु खधाम का अन्त करना तथा सभी

अज्ञान की नादR

स।े

मालम्ू ा है ाव्ि ासने सल्ु ाया

देते हैं और जिन्होंने समस्त विश्व को ़जह-

आत्माओं को पतित से पावन बनाना।

कब आते हैं शिव

`शिव' उनका दिव्य नाम है। ये नाम उनके शरीर का नहीं है, वे तो

सदा ही निराकार हैं।

है आपको इस कुम्भकरण की नींद में? रा- वण ने। ये रावण लंका अधिपति नहीं, अब

रीला बना दिया है। राष्ट्रों के मध्य भी ़जहर

व्याप्त है तो प्रकृति भी ़जहर उगल रही है। अब पन्ु ाः सभी ने ाश्ि ाव का स्मरण ाव्ि ाया आरै वे आ गये हैं, सबका ़जहर पीने व बदले में अमृत पिलाने। तो दे दो उन्हें ये अपने पांच विकार ि-

जन्होंने त् ाा ु म्हारा सबकुछ नष्ट कर दिया है।

मस्कट। इंद्रामणि पाण्डेय,एम्बेसेडर ऑफ इंडिया टू द सल्तनत ऑफ आम्े ान के साथ मल्ु ाकात व आध्यात्ि मक चर्चा के पश्चात् ाच्ि ात्र में इद्रं ामाण्ि ा पाण्डेय, ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. रूपेश, ब्र.कु. रामू व ब्र.कु. गायत्री।

आगरा (सेक्टर 7) ः ग्राम विकास अभियान के अन्तर्गत आयोजित रैली का शुभारम्भ करते हुए शिम्बुजिया कॉलेज के डायरेक्टर जी.एस. राणा, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता व अन्य।

सारे नहीं तो अपना क्रोध या

दिल्ली-महिपालपुर। मुख्यमंत्री माननीय

अहंकार ब्हाख्रि्r दतेय्दारो।पुरा-शिब्विहरारा।त्रिबव्खितारि्दारवपस्ुराच्पार्चा के

विद्यालय की प्रिन्सीपल मोनिका बहन के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. मृदुल।

सच्चे मन से किसी एक बुराई का शिव को

दान कर दो तो आपकी भक्ति भी सफल हो जायेगी व जीवन भी।

सदा के लिए व्रत ले लो भक्ति में बड़ा

उनका अवतरण होता है तब,डिहरी-बिहार। `अख्वािल्शव्भाारधिताप्rयात्विाहसै।ानय्सो श्राव्विोत्णवाहरण्ै -ा

Dपाभिं्चयाान्वि'ाव्वाारओंंतर्गतमहत्व है वत््र ा का। जब माया रावण यहां सभी व्अााायओज्वित्ाल्व्याार्णवा्रम म्वों

दाप्नापाम््रजव्।ाल्वित्ाव्मा,रत्वेहाऐधप्,ा्रख्लणडोभ्पा,्रमुख्मान्ेहातव्ू ासि्अंहा,हप्-ा्रखण्डलोग लम्बी-लम्बी

करते हुए ब्र.कु. अनूसुइया। साथ हैं भगवान भाई।

कर देता है। वे सबका कल्याण्णृषिवफ्ारदातधि्व्हाां्र-ी, मांव्हिल्ारा स्।ामझाज्नहसोव्ेंनाे स्हाना

rत्चाहसिुँंहD,ाब्ेरर्.वDु.ांध्शावोभ्ाारव व्Dयानय्पत्।ा

पदै

ल यात्रा करके

इसलिए उनका नाम `शिव' गाया जाने

लगता है।

कर सबको सुला दिया है। अब जागो। जगाने के लिए ज्ञान के सागर परमपिता

शिव पर पवित्र

नदियों का जल

नाहन-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय मेला श्री

शिव, रात्रि में आते हैं, परन्तु उस रात्रि में

नहीं जो रो॰ज होती है। ये महारात्रि तब कहलाती है जब सम्पूर्ण धरा पर अज्ञान का अंधकार छा जाता है, चहुँ ओर पांच विकार

हाहाकार मचा देते हैं, मनुष्य दुःखी, अशांत व परेशान होकर उसे पुकारने लगते हैं कि हे ज्ञान सूर्य आओ, इस अ- ंधकार को हराे, हमें सत्य ज्ञान का

भी चढ़ाते हैं औरसोजत सिटी-राज.। `स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत निकालारr ेणुका जी में माननीय मुख्यमंत्री वीरभद्र

कहीं-कहींग्बझर्लिलभी ाम्r।ो ं उय्पो ास्स्थिबातत्हां े म्हयम्ुनिसिपल कॉर्पोरेशन के चेयरमैन मांगीलाल करते ही

ज्आा,त्वोह@पैं।ोर्टेटDराबविव्साम्सायटंव्हा, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. आरती व अन्य। आजीवन

व्रत लेने

का, मन

को शुद्ध करने का। यदि भावि ात। ा

प्रकाश दो। और वह समय होता हैसीकर-राज.। विश्व शांति मेला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए बायें सेकरते व

कालि ाकाल का अत् ा। तब वे पज्र ाापि ाताब्र.कु. स्वाति, ब्र.कु. पुष्पा, पवन मोदी, सुभाष महरिया,पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकासशाǒा पढ़ते

राज्यमंत्री, ब्र.कु. पूनम, गोवर्धन वर्मा,विधायक, महेश जी व ब्र.कु. अरूण।

बिलाड़ा-राज.। विधि एवं कानून

राज्यमंत्री अर्जुन लालजी को ईश्वरीय

ब्रह्मा के तन में आकर सभी को

सत्य ज्ञान देते हैं व राजयोग सिखाते हैं, इससे सभी विकार मुक्त होकर सुखी हो जाते हैं। उसी की यादगार में यह महापर्व मनाया जाता है।

अब शिव स्वयं जगाने आये हैं

शिव सत्य ज्ञान दे रहे हैं जिससे हमें अपने सत्य स्वरूप की स्मृति आ जाती है और हम सदा के लिए अज्ञान अंधकार से बाहर आ जाते हैं। अब वे न केवल दर्शन दे रहे हैं, बल्कि सदा मिलन मना रहे हैं, जन्म- जन्म की मिलने की प्यास बुझा रहे हैं। आ

या कठिन त्पादेशलमा-य्हाात्रि्रयाण्वार।ञ्शोंभ्तिाय्rामत्रानाको हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए आयकर

शुद्ध न हुआ, आच्अराय्णुवा।तन्निमर्जाल्ेशा ञ्नापहरिDयाा,ञ्सारञ्पांच्मार्द ेवराज गोयल, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. निर्मला व अन्य।

श्रेष्ठ न हुए तो जान लें कि ऐसी भक्ति निष्फल ही जाती है।

जब हम पैदल चलें तो हमारे प्रत्येक कदम में पुण्य समाया हो, हमारे कर्म सुखदाई हों

प्यारे भक्तों, अब तक आप हर वर्ष शिव-

जाओ, अपने प्राणेश्वर प्यार के सागर से

तो ाश्ि ाव पर जल चढæ

ाना सार्थव् ा हाग्े ा। ाश्ि ाव

रात्रि के समय पूरी रात जागकर शिव का

मिलकर अपनी जन्म-जन्म की प्यास बुझा

तो हम पर अमत्ृ ा चढæ

ाते ह,ैं

हम उन पर पण्ु य

आह्वान करते हो व उसके दर्शनों की

अभिलाषा रखते हो। अब आपका इन्त◌ार

लो। भक्ति का फल पा लो।

कर्मों का जल चढ़ाकर उसका रिटर्न करें।

तो आओ हम पुण्य कर्म करने का व्रत लें

मुम्बई-सांताक्रूज। लखनउ में राहुल गांधी के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मीरा।

4 फरवरी-घ्, 2016

ओम शान्ति मीडिया

पारि

ास्ि

थात्ि

ा में ास्ि

थात्ि

ा बनाना स्वयं की ाज्ञ्ि

ाम्मव्े

ारी

प्रश्नः- रिश्तों में खिंचाव, चलो ठीक है इतना तो होता ही है।

उत्तरः- `रिश्तों में खिंचाव होना स्वाभाविक है', `एक-दूसरे के साथ झगड़ा करना ये सब होना ये तो स्वाभाविक हैं' स्वाभाव्ि ाक...स्वाभाव्ि ाक...कहत-े कहते हमने

से दस तक की एक स्केल पर ले लेते हैं। आज मान लो कि मेरा तनाव नम्बर-2 पर है। लेकिन कल परिस्थिति बहुत ़ज्यादा बढ़ गयी तो हमारे तनाव का स्तर तुरंत ही आगे बढ़ जाता है, वह दो नंबर पर स्थिर नहीं रहता है। और तब

वो हिचक अपना स्वाभाविक व्यवहार बना लिया। अब परिवार में कुछ बड़ी घटना घटित हो गयी, इसमें वो अपनी ि़जम्मेवारी लेते हैं कि ये मेरी ि़जम्मेवारी है, पूरे परिवार को, पूरी कम्पनी को, सबको साथ में लेकर

चलना है। ऐसे समय पर वो अपने दबाव को,

जेवर-पलवल। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र `प्रभु आँचल' के अवसर पर आयोजित

इतनी सारी अस्वाभाविक ची़जों को

हम क्या कहते हैं कि

अपने साथ अदं

र दबा लत्े ो हैं आरै

पारि ास्ि थात्ि ा

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी। साथ हैं आई.ए.एस. रीता

राम मीना,लेबर कमिश्नर,गा०जयाबाद, ओमप्रकाश वर्मा,चेयरमैन,नगरपालिका, ब्र.कु. अनूसुइया, ब्र.कु. सुषमा व ब्र.कु. सुदेश।

कपूरथला-पंजाब। `किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजपाल तीन रत्न मिशन के सम्पादक समाजसेवी श्याम सुंदर अग्रवाल, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. मोनिका, ब्र.कु लक्ष्मी व अन्य।

पुणे-पिंपरी। साधू वासवानी मिशन की ओर से मीटलेस डे के उपलक्ष्य में

स्वाभाविक बना दिया। क्यों, क्योंकि जो सबसे महत्वपूर्ण चीं०ज थी, हमने उसको ही स्वाभाविक कह दिया।

प्रश्नः- वास्तव में हमारे पास इलाज ही नहीं थे। हमने कोशिश भी किया लेकिन हमें समझ में ही नहीं आया कि क्या करें और फिर हमें आगे तो बढ़ना ही है।

उत्तरः- `थोड़ा-थोड़ा तनाव होना स्वाभाविक है' ये कहने पर थोड़े की परिभाषा, थोड़े का पैमाना कौन निर्धारित करेगा कि थोड़ा क्या है? क्योंकि आज हमारा तनाव परिस्थिति पर निर्भर है। हमने कहा परिस्थिति दबाव पैदा करती है। आज छोटी-मोटी परिस्थिति है तो हमने कहा कि थोड़ा-बहुत दबाव होना तो स्वाभाविक है। लेकिन क्या कल परिस्थिति हमें बताकर आयेगी! बगैर परिस्थिति कल हो सकता है कि आर्थिक संकट मुझे प्रभावित कर दे, कल हो सकता है कि मेरे घर पर कुछ हो जाये, व्यापार बंद हो जाये, प्राकृतिक आपदा आ जाये, ये सब चीं०जें ऐसी हैं जिसका हम पूर्वानुमान नहीं लगा सकते हैं।

तब क्या हम अपने तनाव पर काम कर पायेंगे कि उसे थोड़े वाले पर ही रखना है, बढ़ाना नहीं है। मान लो हम अपने तनाव को एक

क्या करें परिस्थिति ही ऐसी थी, ये तो होना ही था। प्रश्नः- एक बात और बहुत से लोग कहते हैं, इस पर भी मैं जानना चाहती हूँ कि ये जो व्यक्ति है ना छोटी-छोटी

बातों में बहुत परेशान हो जाता है, छोटी- छोटी चीं०जें इन्हें परेशान कर देती हैं लेकिन कोई बड़ी बात आ जाती है, तब सुरक्षित रहते हैं। यह किस प्रकार का व्यक्तित्व है? उत्तरः- जब परिस्थिति बड़ी आ जाती है, तो वो अपनी ि०जम्मेवारी को महसूस कर लेते हैं। एक

होता है छोटे-छोटे स्तर पर चिड़चिड़ा होना ये नहीं हुआ, वो नहीं हुआ, एक होता है जब बड़ी परिस्थिति आती है तो उनको अपनी ाज्ंि ाम्मव्े ारी का एहसास हात्े ा है कि इस परिस्थिति का हमें कैसे सामना करना है। यह ंजरूरी नहीं है कि वो दबाव पैदा नहीं कर रहा है। लेकिन उनका ध्यान बहुत स्पष्ट है कि मुझे इस परिस्थिति को पार करना है, ये मेरी ि ंजम्मेवारी है। छोटी-छोटी ची ंजों में तो वो परिस्थिति नहीं थी,

को पार कर लेते हैं। लेकिन यह संभव नहीं है कि वो अपनी स्थिरता को, अगर वो छोटी

ची ंज में स्थिर नहीं थे, तो बड़ी परिस्थिति में भी वो स्थिर नहीं होंगे। अगर घर में सारे लोग तनाव में हैं, तो हम तुरंत यही सोचते हैं कि मुझे ऐसा कुछ नहीं कहना है, जिससे कि ये और भी तनाव में आ जायें। मैं तुरंत अपने व्यवहार को बदल देता हूँ और बहुत ही सोच-समझकर बोलता हूँ जिससे किसी को दुःख न हो। और कई लोगों के साथ ऐसा भी होता है कि परिस्थिति को तो वो पार कर लेते हैं। जैसे परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु हो गयी है, सब लोग बहुत दुःखी हैं, बहुत रो रहे हैं। एक है जो ि ंजम्मेवारी लेता है कि हमें इस परिस्थिति को पार करना है, तो वो जैसे अपने दर्द को अंदर ही अंदर दबा देते हैं और सहजता पूर्वक उस परिस्थिति को पार कर लेते हैं। लेकिन इसके बाद वो कई बार बुरी तरह से टूट जाते हैं, क्योंकि उनके अंदर तो वो पूरा दर्द भरा हुआ है, वो निकला नहीं है, वो उन्हें सुख से जीने नहीं देता है। इसको हम कहेंगे कि उन्होंने स्ट्रेस क्रियेट नहीं किया लेकिन उसको अंदर दबा दिया, जिसके कारण वो अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं। - क्रमशः

आयोजित महारैली में ब्रह्माकुमारी ंज के सतयुगी स्वर्णिम आहार एवं आने वाली दुनिया रामराज्य की झाँकी और कॉमेन्ट्री द्वारा संदेश दिये जाने के पश्चात् मिशन के प्रमुख दादा वासवानी जी के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. सुरेखा।

शांत अंतःकरण वाला योगी ही रहता परमात्म स्मृति में

गतांक से आगे...

अर्जुन भगवान से प्रश्न पूछता है कि कब जीवात्मा स्वयं का मित्र वा शत्रु होता है?

भगवान ने बहुत ही अच्छी रीति से उसका जबाव दिया कि जब मन सहित इंद्रियाँ जीती हुई हैं तो वही मन मित्र है। जब मन

ध्यान की सही विधि। अब प्रश्न उठता है कि

भगवान ने इस योग की विधि क्यों बतायी? उसके पीछे भी क्या गु¿ा रहस्य है? क्योंकि जब ध्यान में बैठना होता है तो आजकल की दुनिया में हरेक को घुटनों की समस्या है, किसी को पीठ का प्रॉब्लम है, इसलिए मैं

कई लोग गुरू के चरणों को थाली में रखकर

धोते हैं और उस पानी को चरणामृत के रूप में बांटते हैं। उस एनर्जा को पानी में ले लिया और सभी को बांटा। अर्थात् उस पानी को

पीयेंगे तो हमारी आत्मा भी चार्ज हो जायेगी। ऐसे कोई आत्मा चार्ज नहीं होती है। ये एक

साहि त इं द्रि याँ परवश ह,ैं

अधान्र ा ह,ैं

कहीं ावि ासी

आपको ये तो नहीं कहग्ूँ ा ावि ा आप नाच्र ो बठै

कर

अंधश्रद्धा का रूप ले चुका है। लेकिन वास्तव

अहमदाबाद-नवरंगपुरा। लुधियाना से ब्र.कु. राज दीदी की ओर से नये वर्ष

आदतों के अधीन, कहीं किसी बुराइयों के अधीन हैं, कहीं कोई ईर्ष्या, द्वेष के अधीन हैं

तो वह परवश है, तब मन उसका शत्रु है।

आसन लगाओ, क्योंकि कोई तकलीफ को बढ़ाना नहीं है। ऐसा न हो ध्यान लगाना चाहेंगे

परमात्मा पर और ध्यान

में आसन बिछाकर के इस आसन में बैठने का भाव यही है कि जब पैरों को मोड़ देते हैं,

के उपलक्ष्य में दिव्य नगरी स्लम के बच्चों के लिए स्वेस्टर्स की सौगात स्लम के

बच्चों को वितरित करते हुए डी.सी.पी. विपिन आहिर। साथ हैं ब्र.कु. ईशिता।

ाज्ि ासने मन को जात्र ा ाल्ि ाया हा,े

एस्े ा परू

ष मान,

बार-बार

अपमान, सुख-दुःख, सर्दा-गर्मा में मन को

शांत रख परमात्मा की स्मृति में समा जाता है। जो योगी अपने आध्यात्मिक ज्ञान और आत्म-अनुभूति से पूर्णतः संतुष्ट रहता है, ऐसे जितेन्द्रिय की दृष्टि में मिट्टी, पत्थर व कंचन एक समान हैं। वह भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले व्यक्ति के प्रति भी समान भाव से व्यवहार करता है। संयम युक्त, अपरिग्रही योगी सदा एकांत में रह अपने मन को वश में कर निरंतर

जायेगा घुटनों में या

पीठ में। तो भगवान का ध्यान कहाँ से लगेगा। जिस तरह से भी आप आराम से बैठ सकें, लेकिन भगवान ने ये बात भी क्यों कही इसके पीछे भी एक

साइंस है। ध्यान में बैठने

गीता ज्ञान का

आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग

दिल्ली-हस्तसाल। `एक शाम प्रभु के नाम' विषयक कार्यकम में दीप प्रज्वलित

करते हुए ब्र.कु. सतीश,माउण्ट आबू, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. निशा व सुनीता।

परमात्मा की याद में बुद्धि को एकाग्र करते हैं। फिर ध्यान में यथार्थ रूप से बैठने की

विधि बतायी। शांत अन्तःकरण, भय रहित,

के लिए जो कहा कि एकांत स्थान में आसन बिछाए, दृढ़तापूर्वक सीधा बैठें। सीधा बैठने के लिए क्यों कहा आसन बिछाकर के, क्योंकि

एनर्जा वहां से निकलना बंद हो जाती है। इसलिए पैरों को मोड़ा जाता है। वो उर्जा फिर ऊपर की ओर आती है मस्तिष्क में, जो

ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित योगी को, पवित्र एकांत

मनुष्य के शरीर में तीन द्वार हैं जहाँ से हमारी

एकागत्र ा के ालि ाए आवश्यक ह,ै

वो ऊर्जा उसके

स्थान में आसन बिछाए, दृढ़तापूर्वक सीधा बैठकर, मन, इंद्रिय तथा कर्म को संयम में रखकर निराकार परमात्मा पर मन, बुद्धि और दृष्टि को एकाग्र कर हृदय के अंदर शुभ

एनर्जा निकलती है। उसमें पहला द्वार है पैर। यहाँ से बहुत एनर्जा बाहर निकल जाती है। इसलिए लोग महात्माओं के सनिध्य में जब जाते हैं तो चरण-स्पर्श करते हैं। इस तरह से

काम में आ जाती है। वो ऊर्जा बहुत ॰जरूरी है। इसलिए पहले के ॰जमाने में घरों में सोफासेट नहीं होता था, बैठकें होती थीं। भोजन के लिए भी कोई डायनिंग टेबल नहीं

भावनायें भरकर योगाभ्यास करना चाहिए।

करते हैं कि वहाँ से जो एनर्जा निकल रही है

हात्े ो थे आरै

न ही कु र्सा हात्े ा था।r

नाच्r ो बठै

कर

आगरा-शाठे ापुरम। सेवाकेन्द्र के िद्वितीय वार्षिकोत्सव में केक काटते हुए ब्र.कु. ज्योत्सना,कोसी कलाँ, पूर्व कमिश्नर सीता राम मीणा, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. शालू व परमानंद भाई,सेल टैक्स ऑफिसर।

वह योग उचित आहार-विहार, कर्मों में उपयुक्त चेष्टा और संतुलित शयन जागरण करने वाले का ही पूर्ण होता है। ये है योग के

वह हमारे तरफ आये। लेकिन वह आती नहीं है, ये खाली एक भावना है, कि वहाँ से जो एनर्जा निकल रही है वह हमें प्राप्त होती है।

भोजन करते थे। आज भी कई परिवारों में नीचे बैठकर ही भोजन किया जाता है।

- क्रमशः

शिव

ओमशान्ति मीडिया महाशिवरात्रि विशेषांक

शुभकामना संदेश

काल चक्र की अंतिम वेला

जिसे आप तलाश रहे हैं वो ही आकर कह रहा है, तुमने मुझे पहाड़ों में ढूंढ़ा, कंदराओं में ढूंढ़ा, मंदिरों में तलाशा, चारो धाम की यात्रा भी की,

फिर भी मुझे नहीं ढूंढ़ पाये। ढूंढ़ भी कैसे पाते, जो खुद को ही भूला हुआ हो, वो खुदा को कैसे जान पायेगा! जब खुद की ही आँखें बंद हैं तो मुझे देख भी कैसे पायेंगे! अरे! ये तो सुना था कि शिव जयंती पर ही परमात्मा का दिव्य अवतरण होता, इसी यादगार शिव जयंती के महान पर्व पर ही मैं इस धरा पर आकर आपको ज्ञान का प्रकाश देकर जगाता और मैं खुद कहता कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। तो जागो, मुझे जानो, पहचानो, इस समय मैं आया हूँ। आप सभी को मुक्ति देने, जीवन को खुशहाल बनाने की तरकीब बताने।

शिवजयंती के इस महान पर्व का इंत◌ार अब पूरा हुआ। क्यों यात्राएं करके खुद को थकाते हो। अरे! सुकून भरी ि◌ंजन्दगी जीयो ना। ऐसी सुकून भरी ि◌ंजन्दगी देने के लिए एक नई दुनिया का नवनिर्माण अब अंतिम चरण पर है। तो देर ना करो, चरण बढ़ाओ और हमारे गुणों को आचरण में धारण करो...

विश्व में सभी को जिस सुख शांति आनंद की तलाश है, उसका आधार

ज्ञान है, और ज्ञान देने वाला ज्ञान दाता परमपिता परमात्मा निराकार शिव हैं। जब हमारे अंदर

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका,

ि◌ंजन्दगी के सा◌ंज को आवा◌ंज देने के

वाला, सब ऐसे ही चलने वाला, नहीं!

ढूंढ़ा, चारो धाम की यात्रा की, फिर

मैं खुद कहता कि तुम मेरे हो, मैं

ज्ञान होगा तो हम

ब्रह्माकुमारी॰ज

लिए एक परा व सुखकारी कलाकार

बदल चुका है, हम आपको उदाहरण

भी मुझे नहीं खोज पाये। खोज भी

तम्ु हारा ह।ूँ

तो जागा,े

जाना,े

पहचाना,े

अपने आपको ज्ञान के आधार से हर समय खुश

की ॰जरूरत है। एक ऐसी अदाकारी जहाँ सब कुछ थम जाए, बस एक निर्वाण की स्थिति हो, जिसमें से निकलने का हमारा बिल्कुल भी मन ना हो, अगर निकले तो उसी में बार- बार जाने का मन करे। सभी को ऐसी ही ि॰जन्दगी की तलाश है जहाँ काया नहीं, माया नहीं, बस मैं हो... बस...मैं! ि॰जन्दगी के सेतु को बनाने वाले का इत् ाज॰ ार हम कब तक करग्ेे ा। े हे हमारे जगत के तारणहार आ जाओ, बस आ जाओ।

आप इस दृश्य को ॰जरा ध्यान से देखिए, इसमें आपको न॰जर क्या आ रहा! लगता नहीं है कि सभी एक मुद्रा में, एकटक किसी को निहार रहे, किसी की बाट जोह रहे या फिर किसी का इंत॰जार कर रहे हैं। काल

चक्र की अंतिम वेला, बस घड़ी की सुई मिलने ही वाली है, सब कुछ बदलने ही वाला है। समय की धूरी पर खरा उतरना हमारा काम है, और हम हैं कि पता नहीं कहाँ खोए पड़े हैं।

अरे मानव! भोर भई कि भई, अब कब तक सोओगे! बहुत सुनहरे भविष्य को दिखाने वाला कब से कह रहा कि, हम तो दिए ही जा रहे हैं, आप ले ही नहीं पा रहे, क्योंकि आप

दिखा सकते हैं, परन्तु उन उदाहरणों को देखने के लिए भी तो समय

कैसे पाते, जो खुद को ही भूला हुआ हो, वो खुदा को कैसे जान पायेगा!

इस समय मैं आया हूँ आपको इस उल् झी ि॰जन्दगी से मुक्त कराने। अब

व शांत रख सकते हैं। हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम उनसे असीम सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियाँ हम सबकी न॰जरों के सामने आने ही वाली हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। हमारे आत्मिक पिता शिव का अवतरण हो चुका है यह संदेश जन-जन तक पहुँच जाये और हर आत्मा सुख-शांति-पवित्रता का वर्षा ले ले यही महा ाश्ि ावजयत् ा के अवसर पर हमारी शभ्ु ा भावना है। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवजयंती पर्व की कोटी-कोटी व हार्दिक शुभकामनाएँ।

योग से ही सम्पूर्ण परिवर्तन संभव

बढ़ता तनाव, उससे होने वाले प्रभाव को कोई भी अनदेखा नहीं कर सकता। हमारा शरीर सम्पूर्ण प्रकृति को दर्शाता है। जब हमारी प्रकृति ही बदल

अपनी ही उलझनों में उलझे हुए हैं।

निकालना पड़ेगा ना! देखना सब कुछ

जब खुद की ही आँखें बंद हैं तो मुझे

काल कंटक, दुःख हर्ता आया है

जायेगी तो उससे

माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी

उलझनों का अंत हो सकता है, यदि

चाहते हो, और आँखें खोलना नहीं

देख भी कैसे पायेंगे! अरे! ये तो सुना

दुःख हरने और जहाँ ि॰जन्दगी सुकून,

हम कितने दिन तक चल पायेंगे। आज हमारा

आप चाहें तो। क्योंकि आराम की

चाहते! अरे प्यारों! अब तो जागो,

था कि शिव जयंती पर ही परमात्मा

चन्ै ा व खा शृि ायों भरी सख्ु

ादायी हा,ै

एस्े ा

इं द्रि यों पर सयं् ाम नहीं ह।ै

सम्पण्ू ार् पव्् र ा ात्ि ा का ान्ि ायत्रं् ाण

ि॰जन्दगी गु॰जर बसर तब होगी जब हम उसे जानेंगे, पहचानेंगे, मानेंगे, उसकी धार में बहेंगे। कई मानवमात्र सिर्फ

समय को पहचानो कि क्या हो रहा है...? जिसे आप खोज रहे हैं वो ही आकर कह रहा है, तुमने मुझे पहाड़ों

का दिव्य अवतरण होता, इसी यादगार शिव जयंती के महान पर्व पर ही मैं इस धरा पर आकर आपको

दुनिया बनाने। अब दुःख के बादल छटकर हो रहा है सुख का आगा॰ज, बस उठो, भर लो झोली और चलो

हम सब कर सकते हैं, किंतु इसके लिए स्वयं को समझना होगा। समझने के लिए अपने को समर्पित

इसी सोच में हैं, कुछ नहीं बदलने

में ढूंढ़ा, कंदराओं में ढूंढ़ा, मंदिरों में

ज्ञान का प्रकाश देकर जगाता और

अपनी उस दुनिया में...

करना हाग्े ा, उस आस्था म,ें

ावृि ाश्वास में जो इर्श् वर

अपने परमपिता रहते परमधाम में

के साथ ही हो सकता है। अरे! शरीर तो एक

साधन है परमशक्ति को अनुभव करने का, उसी को आप असंयमित होकर नष्ट कर रहे हैं।

शिव परमात्मा सर्व का रचयिता है जिसे त्रिमूर्ति, तीनों

अर्थ है कल्याणकारी। परमात्मा निराकार है, इसका

अथवा मुख उपर की ओर उठाते हैं, क्योंकि यह स्मृति

महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह पाँच प्राकृतिक

परमात्मा से योग हमारी शारीरिक, मानसिक

क्षमता को बढ़ाता है, हमारी विशेषताओं को

लोकों का मालिक,

अर्थ ये नहीं कि उसका कोई

परमपिता परमात्मा की है जो

तत्वों से आत्ि ा सक्ष्ू म ह।ै

इसका

विकसित करता है। बस इसके लिए सत्य ज्ञान

ात्र्ि ालाव्े ान्ा ाथ आरै

तान्ा ां कालों

आकार नहीं है, बल्कि

उपर परमधाम में निवास

साक्षात्कार ादि व्य-चक्षु द्वारा ही

की आवश्यकता है। अब हमारे पास ना ही ज्ञान

को जानने वाला त्रिकालदर्शा कहते हैं। वो सर्व आत्माओं का पिता है। उसका रूप ज्योतिर्बिन्दु है, और वो

उसका कोई शरीर नहीं है। आकार का अर्थ स्थल्ू ा आख्ँ ा ं से न िदिखने वाला सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है।

करते हैं। वो देवताओं के सूक्ष्मलोक से भी उपर एक कर्मातीत रूप से फैला ते०ज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश

हो सकता है। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम,

शांतिधाम, निर्वाणधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता

है, ना अनुभव, इसलिए कठिन लगता है। अरे !

यह बहुत ही सरल है, जैसे बीज में वटवृक्ष है, वैसे ही हमारे अंदर नर से नारायण बनने की असीम

क्षमता है। परमात्मा से योग ही हमें नर से नारायण

परमधाम ान्ि ावासी ह।ै

ाश्ि ाव का

हम जाने अनजाने अपना हाथ

है जिसको अखण्ड ज्योति

है। वे वहाँ वास करते हैं।

बना देगा, और वह संभव होगा राजयोग से।

जिसे पूजा, वही हुए धरा पर अवतरित

शरीर को परिपक्व बनने की प्रतीक्षा में लगाना पड़ेगा। अतः परमात्मा एक वृद्ध, अनुभवी तन में दिव्य-प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा तुरंत ही ज्ञान-योग की शिक्षा

इसलिए हम इस लेख के माध्यम से आपको सारी बातें विस्तार में नहीं बता सकते, इसके लिए आपको थोड़ा सा समय इन सब बातों को समझने के लिए देना होगा।

जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है।

यादि

वे गर्भ से जन्म लें तो गर्भ का समय आरै

बाल्यावस्था

का समय व्यर्थ चला जाये। युवावस्था भी बु॰जुर्गों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त नहीं है। आध्यात्मिक शिक्षा तो वानप्रस्थ अवस्था में ही प्रभावोत्पादक ढंग से दी जा सकती है, जब मनुष्य अनुभव-सम्पन्न हो जाता है। गर्भ से जन्म लेने पर परमात्मा को ज्ञान देने के पूर्व पचास वर्ष

देने लगते हैं। वो तन प्रजापिता ब्रह्मा का होता है, जिसके आधार से परमात्मा का जन्म माना जाता है। यह जन्म अलौकिक है, दिव्य है, अतः इसे समझने के लिए हमें दिव्य बुद्धि की भी ॰जरूरत है। चूंकि परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान के लिए थोड़े धैर्य की आवश्यकता है,

शिवरात्रि हर बार आयेगी, लेकिन परमात्मा शिव कल्प में एक ही बार आते हैं, और वे आ चुके हैं। कब, क्यों, कैसे, उसे जानने हेतु आप समय अवश्य दें।

“झ्िंAण्िं ध्इ श्घ्ND” इRिंं ऊ.न्न्. ण्प्ANNथिं् ध्N Dऊप् Nिंऊेंध्Rख्. ऊAऊA एख्भ्- 192, Aघ्Rऊथिं्- 686, न्न्घ्Dण्धिं्N- 497, Rथ्घिं्ANण्िं- 171

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत भूमि पर बड़े सहज व शांतिमय ढंग से महापरिवर्तन का नया दौर चल चुका है। और आपको आश्चर्यजनक लगेगा, परन्तु इसका बीड़ा स्वयं परमात्मा ने उठाया है। अरावली की श्रृंखला में बसा पवित्र स्थान माउण्ट आबू में

परमात्मा शिव निराकार ज्योतिर्बिन्दू अपने साकार माध्यम, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर यह कार्य करवा रहे हैं। इस महापरिवर्तन में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है। जैसे गौतम बुद्ध जी ने कहा ावृि ाा इच्छाएं ही मनष्ु य के दःु ख का कारण हैं। तो बस हमें इच्छाएं कम करनी हैं। उसके लिए आत्मा की खुराक को

आत्माय!ेंं

बस अपने को आत्मा समझकर

पूरे विश्व को एक नये दौर में ले जाते

चल रहा है। महापरिवर्तन का यह दौर

भी ऐसी पावन दुनिया में ले चलूं जहाँ

समझना है। क्योंकि आत्मा सतोगुणी है,

इसकी मानवीय इच्छाएं इन्द्रियों के असंयम के आधार से हैं। इसलिए हे

चलना, कार्य करना है। शक्ति के लिए बार-बार हमसे जुड़ना है। यही परमात्मा हमसे कहते, और इसी के आधार से

हैं। यह पूर्णतः स्वैच्छिक है, आप भी क्यों नहीं इस विधि को अपनाकर देखते हैं। यह कार्य चूंकि 80 वर्षों से अनवरत

बस चंद दिनों का है। हम सभी के पिता शिव निराकार परमात्मा अपको भी यह मौका देना चाहते हैं कि आओ आपको

बिना मेहनत सब कुछ मिल जायेगा। कुछ नहीं करना है वहाँ, लेकिन उसके लिए यहाँ मेहनत करनी है।

`भगवान' अथवा `परमात्मा' जो सारी सृष्टि का माता-पिता, अविनाशी शिक्षक तथा

संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा

प्रेम ही जीवन का सत्य है

ई.आई.

मालेकर, मानद सचिव,यहूदी धर्मसभा

परमात्मा की तरह बेहद हम भी बनें

गुरूबचन सिंह, उपाध्यक्ष, दिल्ली सिक्ख गुरूद्वार प्रबंधन समिति ने कहा कि परमात्मा ने जब मनुष्य को रचा तो उसको अपने जैसा बनाया। जिस तरह

एकमात्र सद्गुरू अर्थात् सद्गति दाता है। नि-

को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु

ने अपने विचार व्यक्त

परमात्मा बहे द ह,ै

हमारी साच्े ा भी बहे द हान्े ा चाहि ए।

राकार शिव वास्तविक रूप में परमात्मा का

अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं

करते हुए

कहा ावि ा हमें

हमारा जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं है, इसका महत्व

नाम है। परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देता है वो अति सहज है जिसे कोई भी अपना सकता है। गीता शब्द गीत से बना

है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है जिसे सभी लोग सुनते हैं और

जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस

ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस

सभी के धर्मग्रन्थों का सम्मान करना चाहि ए। उन्हान्े ं ो कहा ावि ा सभी धर्मों की शिक्षाएं समान हैं, अगर अंतर है तो उनको ास्ि ार्फ जाव्र ान में उतारने का। जाव्र ान का असली सत्य यही है कि हम सबसे प्रेम से व्यवहार करें, सबको

सहयोग दें और जो व्यवहार मेरे अनुकूल ना हो वैसा दूसरों से

तभी है जब हम दूसरों के काम आते हैं।

ज्योति स्वरूप को सभी ने माना भगवान

डॉ. एस.एम. मिश्रा, संस्कृत विश्व-विद्यालय कुरूक्षेत्र ने कहा कि सभी धर्मों में परमात्मा को प्रायः ज्योति के रूप में ही माना जाता है, और शिवलिंग भी ज्योति स्वरूप का ही पर्याय है। हमारे देश में जितने भी प्रमुख शिव मंदिर हैं उनको ज्योतिर्लिंगम के नाम से

आनदं

ावृि ाभारे

हो जाते ह।ैं

व-ै

न करें।

ही जाना जाता है। अनेक भाषाओं और अनेक सिद्धान्तों के कारण लोगों

से ही यह ज्ञान भी एक गीत की तरह है जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका आनंद ले मन- मोहक `कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता

ज्ञान दाता है, जिस गीता को सन्ु ाकर ही मनमाहे न की तरह बना जा सकता है। श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि

इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की

ब्रह्मदेव ने माना `ब्रह्मतत्व'

निवासी निराकार शिव परमात्मा का अस्तित्व

त्रिनिदाद वैदिक विश्व-

विद्यालय के उपकुलपति स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि शिवरात्रि निराकार ज्या त्ि ाब्ि ार्न् दु स्वरूप ज्या -

तिर्लिंग परमात्मा शिव का मनुष्य समाज में व्याप्त अज्ञान अंधकार दूर करने हेतु अ- वतरित होने का यादगार दिवस है। उन्होंने

में मतभेद पैदा हुए हैं। आज हमें आवश्यकता है कि हम ईश्वर की

एकरूपता को स्वीकार कर सबका सम्मान करें। इस संसार का पतन तब से शुरू हुआ जबसे हमने उसको अलग-अलग समझना शुरू कर दिया।

हम सब एक ईश्वर के बंदे

मो.अहमद,राष्ट्रीय सचिव, जमात इस्लाम हिन्द ने कहा कि खुदा प्यार के साथ-साथ न्यायकारी भी है, इसलिए हमें भी चाहिए कि सबके साथ न्याय हो। हम सब उसके बन्दे हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं हो

तभी इस विश्व में शान्ति और अमन कायम हो पायेगा।

वो और उसका प्यार सबके लिए समान

प्राप्ति होती है और जीवन के

कहा कि केवल पूजा-पाठ, व्रत आदि से ही

डा.@

एम.डा.r

थाम्@ ाास,इन्स्टाटr य्् ाटू

आप्@ ाा हारमनी स्टडाज्०r ाा

अंतिम क्षणों में गीता ०जरूर सुननी चाहिए,

राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व

नहीं, अपितु शिव के वास्तविक निराकार

का कहना है कि आज हम परमात्मा को भिन्न-भिन्न

नामों से पुकारते हैं, जबकि वास्तव में देखा जाए तो

ये एक मान्यता ह।ै

ये ाव्ि ाचारणाय्r ाा है ाव्ि ाा बहत्ु ाां

ला सकते हैं। श्रीकृष्ण के भी परमपिता शिव

स्वरूप की पहचान तथा राजयोग द्वारा उनके

उसका एक ही रूप है। जिस प्रकार किसी एक ही

ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग ाम्ि ाला हाग्े ाा? आज उसी

माक्ष्े ा व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम

हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरू शिव से ही वह श्री नारायण पद प्र ा्िा्त ाया था। इसा- लिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है जिसमें श्रीकृष्ण को शिव की पूजा करते हुए दिखाया गया है।

साथ अंतरात्मा के सर्व सम्बन्धों की याद से

ही मनुष्य अपने पापों को भस्म कर सकता है। उपरोक्त धर्म के पुरोधों ने तथाकथित रूप से परमात्मा ािश्ा्व के आस्ि तत्व को स्वाव्ा ारा, चाहे वह अंशतः ही क्यों न हो!

वस्तु के अनेक देशों में भाषा के आधार से भिन्न- भिन्न नाम होते हैं, वैसे ही परमात्मा के भी अनेक नाम हैं। परमात्मा का प्यार सबके लिए समान है, वो

किसी से भी जाति व धर्म के आधार से प्यार नहीं करता। जब हम उससे जुड़ते हैं तो हमें सारा ही विश्व एक परिवार लगता है।

सम्पर्क ः मुख्यालय- ब्रह्माकुमारी॰ज, ओमशान्ति मीडिया,पोस्ट बॉक्स-5,तलहटी,आबू रोड(राज.)-307510 मो.8107119445, 9414006096

निराकार ज्योति स्वरूप से ही किया सभी ने प्रेम

``किसी का दिल अगर जीतना है तो उसके प्रति सम्पूर्ण समर्पण चाहिए, ऐसा आप सब भी तो मानते ही हैं ना! वैसे भी प्रेम समर्पण का ही एक

नाम है। प्रेम के लिए किसी को भी कोई विशेष प्रतिमा या आकृति या आकार की ॰जरूरत नहीं पड़ती, इसमें तो सिर्फ गुणों पर फिदा होना होता है। अगर आकृति पर िफिदा होंगे तो कहीं न कहीं से थोड़ा बहुत नुक्स निकाल ही लेंगे। शायद इसीलिए उस निराकार से प्यार करना सबको बहुत सहज व सुखद लगा। और लगेगा भी क्यों नहीं, क्योंकि वह गुणों नहीं, सर्व गुणों का सागर है, हम सभी का चहेता है। जिसके आधार से इस सृष्टि में प्रेम बसता है, और इस दुनिया में हर किसी को, जिसका वो सागर है वही चाहिए, जैसे प्रेम,

प्यार, स्नेह, और कुछ नहीं। बस यही हमारी, आप सबकी इच्छा भी तो है। तो उस प्रेम के सागर से आओ हम भी प्रेम कर लें। प्रेम की ऐसी ही कुछ झलकियाँ इन धर्म पिताओं, महात्माओं के द्वारा दर्शायी गई जिनकी भाषा और भाव को सुनकर पता चलता है कि वे परमात्मा से कितना प्यार करते थे...!!!"

पारसियों में भी पारसनाथ से

करते हैं प्रेम

ईसा मसीह (जी०जस क्राइस्ट) ने गॉड

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का

में भी शिवलिंग के आकार का

को लाइट कहा ह।ै

उन्हान्ेंं ो कहा ह,ै

गाड@

होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि

पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व

इ०ज लाईट, आई एम द सन् ऑफ

गॉड। जी०जस ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया।

उस ज्योति `जेहोवा' से किया प्रेम

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब ह०जरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए

पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं।

सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग- ए-असवद् कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मा त्ि ार् पज्ू ा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं।

तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का

राम्े ा में ाश्ि ावाल्ि ाग्ं ा को ाप्ि ाय्ु र ापस कहते थ।े

वहीं

जापान, चीन, बेबीलोन में भी

साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही

इटली में ाग्ि ारजा में ाश्ि ावाल्ि ाग्ं ा की पा्र त्ि ामा रखी

ह०जरत मूसा ने कहा `जेहोवा'। उस

जाती रही ह।ै

ाग्ि ारजा शब्द ाग्ि ारि जा से बना

निराकार से प्रेम का चिन्ह

तेज को नाम दिया जेहोवा और उस

है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी

जापान में शिकोनि०जम सेक्ट वाले

प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस

आत्माओं रूपी पार्वा त्ि ायों के

पा्र त्ि ा परमात्मा

तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन

आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड

ाश्ि ाव की पा्र त्ि ामा इनमें स्थाप्ि ात हडु र् रहती था।r

फाटr

दरू

बठै

कर एक थाली में रखे

टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

दे शिवा वर मोहे

इसाल्ि ाए चर्च का नाम ाग्ि ारजाघर ह।ै

श्रीकृष्ण को भी मोहा शिव ने

लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को `करनी

सिक्खों के धर्म-स्थापक गुरू नानक जी

का पाव्ि ात्र पत्थर' कहते ह।ैं

उसका

ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी

महाभारत युद्ध के पहले कुरूक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर

नाम दिया है चिंकोनसेकी जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को

ओंकारेश्वर है। गुरू गोविन्द सिंह जी के

उस परमपिता निराकार शिव की

हव्ु ाडे

-ाहि फु ह कहा जाता था आरै

`दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

श्रीराम के ने भी पूजा `शिव' को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता हुई? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरूआत करने से पहले परमात्मा का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई तथा युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिñा में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी

देश के निवासी शिव को `सेवा' या

`सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

शिवरात्रि का त्योहार खुशियों की बहार

आज हम सभी अपने मन को या यूं कहें कि अपने आपको

खुशी देने हेतु अन्यानेक खुशियों के अल्पकालिक हथकंडे

अपना रहे हैं। फिर भी इस चकाचौंध में हमें खुशी की झलक

नाममात्र ही मिल पा रही है। मिलेगी भी कैसे, क्योंकि खुशी

विनाशी और बदलने वाली

चीजों में नहीं है, यह हम नहीं खुद परमात्मा हमसे कह रहे हैं। परमात्मा निराकार शिव जो खुशियों का सागर है, वो हमें खुशी की चाबी देने आये हैं। लेकिन उस खुशी की

चाबी को लेने के लिए सबसे पहले अपने अंदर के खजानों को बढ़ाना होगा, जैसे शांति, प्रेम, पवित्रता को बढ़ाना होगा।

मन को इन फालतू कचरों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

से दूर करो। इसके लिए बस आपको जागना है, जागना अर्थात् हर पल, हर क्षण अपने विचारों में खुशी के विचार डालते रहना।

अरे! मैं तुम्हारा पिता हूँ, मैं खुशी का सागर हूँ और सागर के बच्चे दुःखी हों, ये अब मुझसे देखा नहीं जाता, इसलिए इस महाशिवरात्रि पर तुम सभी बच्चे मेरे से प्रतिज्ञा करो कि हम इन सभी विकारों का दान देकर और खुशियों की चाबी आपसे लेकर ही छोड़ेंगे। बस हम इंतजार कर रहे हैं बाहें पसारे आपके इस संकल्प का। देखते हैं कौन-कौन से बच्चे इसमें नम्बर वन लेते हैं अपने

अंदर भरे हुए दुर्गुणों को, दुष्कर्मों को निकालने में! गीता में सुनाई हुई बातों को चरित्रार्थ करने का यही समय है। मेरे लाडलों! अब

जाग जाओ, समय बहुत थोड़ा है, भर लो झोली खुशियों से।

परमात्मा कहते हैं, मेरे बच्चों! अब मैं आपको सबकुछ दूंगा, बस एक काम करो कि अपने

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

ओम शान्ति मीडिया फरवरी-घ्, 2016 9

कथा सरिता

कहीं पछताना ना पड़े!!!

एक अतिश्रेष्ठ व्यक्ति थे, एक दिन उनके पास एक निर्धन आदमी आया और बोला कि मुझे अपना खेत कुछ साल के लिये उधार दे दीजिये, मैं उसमें

किसानों ने खेत का उपयोग अच्छे से नहीं किया था, ना ही अच्छे बीज डाले थे जिससे फसल अच्छी हो सके।

जयपरु -वश्ै ाली नगर। सव्े ाके न्द्र के 18वें वाष्ि ार्व् ात्े सव पर के क काटते हुए

सरकारी

खेती करूंगा और खेती करके कमाई करूंगा, वह अतिश्रेष्ठ व्यक्ति बहुत दयालु थे। उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को अपना खेत दे दिया और साथ में पाँच किसान भी सहायता के रूप में खेती करने को दिये और कहा कि इन पाँच किसानों को साथ में लेकर खेती करो, खेती करने में आसानी होगी, इससे तुम और अच्छी फसल की खेती करके कमाई कर पाओगे। वो निर्धन आदमी ये देख के बहुत खुश हुआ कि उसको उधार में खेत भी मिल गया और साथ में पाँच सहायक किसान भी मिल गये। लेकिन वो आदमी अपनी इस खुशी में बहुत खो गया, और वह पाँच किसान अपनी म०र्जा से खेती करने लगे और वह निर्धन आदमी अपनी खुशी में डूबा रहा, और जब फसल काटने का समय आया तो देखा कि फसल बहुत ही खराब हुई थी, उन पाँच

जब वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति ने अपना खेत वापस मांगा तो वह निर्धन व्यक्ति रोता हुआ बोला कि मैं बर्बाद हो गय्ा, मैं अपनी खुशी में डूबा रहा और इन पाँच किसानों को नियंत्रण में न रख सका, ना ही इनसे अच्छी खेती करवा सका। अब यहाँ ध्यान दीजियेगा

- वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति हैं - ``भगवान''। निर्धन व्यक्ति हैं - ``हम''। खेत है- ``हमारा शरीर''। पाँच किसान हैं हमारी इन्द्रियाँ - ``आँख, कान, नाक, जीभ और मन''। प्रभु ने हमें यह शरीर रूपी खेत अच्छी फसल(कर्म) करने को दिया है और हमें इन पाँच किसानों को अर्थात् इन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख कर कर्म करने चाहिये, जिससे जब वो दयालु प्रभु जब ये शरीर वापस मांग कर हिसाब करें तो हमें रोना न पड़े।

बि०जनेसमैन वेद प्रकाश, पूर्व अल्पसंख्यक आयोग अध्यक्ष जसवीर सिंह, बि०जनेसमैन

कमल परासर, ब्र.कु. सुषमा, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. चन्द्रकला, ब्र.कु. लीला व कांग्रेसी नेता राजेश मिश्रा।

इन्दौर-कालानी नगर। भागवत कथा कार्यक्रम के दौरान पंडित तिवारी जी को ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सुजाता।

हाथरस। मौलाना इरफान उल्लाह खान,नजामी शाही इमाम जामा मस्जिद,आगरा को ईश्वरीय सौगात में खुदा का खत भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना।

रामनगर-जम्मू कश्मीर। प्रो. डॉ. कुलदीप सिंह व एडवोकेट दीपक सिंह बलोरिया को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मल।

दाने को देखकर चिड़ियाएं भी आपके

जाए तो सभी की कटा रि याँ बहत्ु ा पहले

ओम शान्ति मीडिया

अथाह दिया

प्रेम एक गहरी आस्था है...

पास चुगने आ जाती हैं। अगर देखा

से ही भरी हुई हैं। प्रकृति ने सबको प्रेम

है, लेकिन न

कोई भी माँ अपने बच्चे को देखकर कितना आनंद अनुभव करती है, वह अतुलनीय है। मनुष्य के साथ यह प्रक्रिया थोड़ी अजीब है, प्रेम में वह सिर्फ दूसरे को ही नहीं रच रहा होता, अपने को भी रच रहा होता है। दूसरे

सिर्फ अहम का विस्तार होता है, जिसमें आप मांगते हैं और निराश होते हैं। प्रेम कोई दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसलिए इसका अंत केवल हताशा और निराशा होता है।

प्रेम एक नहीं सब है

प्रेम अपने वास्तविक रूप में एक दृष्टिकोण है जो आपको और दुनिया के सम्बंधों को अभिव्यक्त करता है। किसी दूसरे के साथ प्रेम सिर्फ अहम का विस्तार होता है, जिसमें आप मांगते हैं और निराश होते हैं। प्रेम कोई दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसलिए इसका

देख पाने की

हमारी स्थिति ही हमें दूसरों से मांगने पर मजबूर करती है। आप पहले से ही भरपूर हैं।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

शब्दों में कहा जाए तो आप ही मिट्टी हैं

प्रेम कभी भी `एक' नहीं होता, हमेशा

अंत केवल हताशा और निराशा होता है।

पम्े ्र ा की मागं् ा है क्य्ो ा आख्ि

ार? जब तक

और आप ही कुम्हार हैं। अब अपना

घड़ा आपको स्वयं बनाना है। तभी आप अपनी प्यास भी स्वयं बुझा सकते हैं। आपको सिर्फ घड़े का निर्माण

`सब' होता है। जब भी वह एक होने

की कोशिश करता है तो कई भ्रामक तथ्यों को जन्म दे देता है। व्यक्ति जब तक अपने पम्ेर ा के माध्यम से परू ी मनष्ु य

तुम मेरे हो तब तक मैं तुम्हें प्रेम करता रहूंगा, तो क्या यह प्रेम हो सकता है, क्या किसी ने क्षण भर भी सोचा कि प्रेम मुक्ति है, न सिर्फ दूसरे से बल्कि

करना ह,ै

बारि श का नहा,R

वह तो हान्े ा

जात्ि ा को आरै

परू ी सा ष्ि ट को पम्ेर ा करने

स्वयं से भी। यह किसी के पीछे भागने

ही है।

अगर कोई यह कहता है कि प्रेम एक- दूसरे के साथ सम्बंध का नाम है, तो वह गलत है। अपने वास्तविक रूप में यह एक दृष्टिकोण है जो आपको और दुनिया के सम्बंधों को अभिव्यक्त करता है। किसी दूसरे के साथ प्रेम

की क्षमता नहीं रखता तब तक जानिए

कि उसका प्रेम अपूर्ण है। वह दूसरों के पास इसलिए जाता है कि खुद को भरा जा सके। आपको हमेशा यह याद रखना है कि दूसरे

आपके पास तभी आते हैं जब आप उन्हें कुछ दे रहे होते हैं। उदाहरण के लिए एक कटोरी में

का नाम नहीं है और ना किसी के सामने कुछ सिद्ध करने का। जब हम किसी को पूरे अपने अस्तित्व और पा्र णों से पम्ेर ा करते हैं तो ास्ि ार्फ हम करते हैं, वहां हम सम्पूर्ण रूप से विसर्जित हैं, समर्पित हैं। हमारा वहां कुछ नहीं बचता।

7 कदम राजयोग की ओर.....

प्रश्नः मेरे मन में एक प्रश्न उठता है व आश्चर्य भी हात्े ा है ाव्ि ा आप लाग्े ा महाश्ि ावरात्र्ि ा को ाश्ि ाव जयत् ा भी कहते हो। आप नये-नये नाम कहाँ से निकालते रहते हो। प्ली॰ज वही नाम रखें जो परम्परागत चला आ रहा है।

उत्तरः नाम तो हर व्यक्ति के बदल जाते हैं। फिर शिव तो स्वयं भगवान हैं, उनके तो ह०जार नाम गाये जाते हैं। उनके नाम गुणवाचक व कर्त्तव्य वाचक हैं। वे कलियुग की महा काली रात में आते हैं इसलिए इस पर्व को महाशिवरात्रि भी कहते हैं, सचमुच तो यह इस धरा पर शिव का अवतरण अथवा दिव्य जन्म ही होता है। इसलिए इसे शिव जयंती भी कहते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं बल्कि अपार हर्ष होना चाहिए कि जिससे आप जन्म-जन्म से मिलना चाहते थे, वह स्वयं आपसे मिलने के लिए आ चुका है, जिसे आप ढूंढ़ते थे, वह आपकी प्यास बुझाने आ चुका है, आज से 80 वर्ष पूर्व उसका दिव्य जन्म हो चुका है।

प्रश्नः आप लोग 80वीं शिव जयंती मना रहे हो। यह 80वीं शिव जयंती ही क्यों? शिव तो अमर हैं, उनको अंकों में बांधना उचित नहीं है। फिर आपको शिव के जन्म लेने का पता कैसे चला? उनके जन्म लेने का पता तो सबको चलना चाहिए। उत्तरः सन् 1936 में निराकार, ज्ञान के सागर,

इसका संदेश हम सारे विश्व को दे रहे हैं और शीघ्र ही यह दिव्य संदेश सारी धरा पर प्रचारित होता जायेगा।

प्रश्नः शिवरात्रि पर लोग जागरण करते हैं, व्रत रखते हैं, शिव पर अक के फूल भी चढ़ाते हैं, क्या सचमुच प्रत्येक शिवरात्रि पर शिव अपने भक्तों से मिलने आते हैं।

उत्तरः हाँ यह सत्य है कि प्रत्येक शिवरात्रि पर शिव अपने भक्तों से व अपने बच्चों से मिलने आते हैं। वही भक्त उनके दर्शन पाते हैं जो सच्चे दिल

से उनकी आराधना करते हैं। इसलिए किसी- किसी सच्चे भक्त को ही उनके दर्शन होते हैं। परन्तु जो अज्ञान की नींद से जाग चुके, जो भक्त

में भक्ति में कई भ्रम एक गलती के कारण पैदा हुए। वो है शिव व शंकर को एक मानना। शिव तो परम ज्योति हैं, परम सत्ता हैं, निराकार हैं, अजन्मा हैं व सभी आत्माओं के परमपिता हैं, जबकि शंकर एक आकारी देवता हैं उन्हें महादेव कहते हैं अर्थात् दव्े ाताओं में महान। जबाव्ि ा ाश्ि ाव को ाश्ि ाव परमात्माय नमः करते हैं। तो शिव व शंकर के चरित्रों को मिला देने से गड़बड़ हो गई। शंकर ही तपस्वी स्वरूप में हैं, वे शिव के ध्यान में मग्न हैं, उन्होंने ही तप के बल से काम को भष्म किया, उन्होंने ही पर्वत पर एकान्त में बैठकर तपस्या की। जबकि शिव परमात्मा को तपस्या की ०जरूरत नहीं, वे तो सम्पूर्ण हैं, सदा मुक्त हैं व ब्रह्मलोक में रहते हैं। शंकर तपस्या के काल में निरंतर ईश्वरीय नशे से युक्त रहे, इसलिए लोगों ने उन्हें भांग के नशे में दर्शा दिया।

क्या भांग खाने वाला तपस्वी या देवता हो सकता है? भांग देवों का आहार नहीं है। हम सब आत्माएं शिव की संतान हैं, उनकी कोई दो संतान नहीं है।

प्रश्नः शंकर का बड़ा ही विलक्षण स्वरूप दिखाया है, देह पर सर्प, राख लपेटे हुए, मस्तक पर चन्द्रमा व सिर से बहती गंगा, हाथ में डमरू व साथ में त्रिशूल। कुछ अटपटा सा लगता है। क्या शंकर ऐसे हैं?

परमपिता परमात्मा शिव परमधाम से इस धरा पर

से उनके बच्चे बन गय,े

ाज्ि ाान्हान्ेे ं ो उन्हें पहचान ाल्ि ाया

उत्तरः वास्तव में शंकर का कोई अलग अस्तित्व

अवतरित हुए। क्योंकि वे अशरीरी, निराकार हैं व जन्म-मरण से न्यारे हैं, इसलिए उन्हें दूसरे के

व अपने जीवन को पवित्र बना लिया उनसे मिलने वे प्रत्येक शिवरात्रि पर जागते हैं। जिन्हांने पवित्रता

नहीं है। वे यादगार हैं, वे प्रतीक मात्र हैं उन महान तपस्वियों के जिन्होंने ज्ञानेश्वर व योगेश्वर शिव

शरारर

में अवतारि त हान्े ा हात्े ा ह।ै

वह भी तन ाव्ि ासी

का व्रत सदा के लिए ले लिया, वे तो उनके अति

के द्वारा सिखाये गये राजयोग की साधना की।

और का नहीं, बल्कि स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा का। जब वे अवतरित हुए तो उन्होंने इस सृष्टि की महानात्माओं का संकल्प से आह्वान किया कि हे वत्सों...मैं आ गया हूँ, तुम भी मेरे पास आ जाओ और वे आत्माएं जो सतयुग आदि में महान देवी- देवता थे, आकर्षित होकर उनके पास आ गये। उन्हान्ें ो अपने परमाप्ि ाता को पहचाना। ाश्ि ाव परमात्मा ने उन्हें सत्य ज्ञान दिया। ब्रह्मा के मुख से ज्ञान की अजñा धारा बहने लगी। तत्पश्चात उनके द्वारा यह संदेश अन्यात्माओं ने जाना और धरा पर अवतरित अपने परमप्रिय परमात्मा को पहचाना। यह आत्मा व परमात्मा के मिलन की शुभ वेला थी। शिव तो अमर हैं, सदा ही हैं, परन्तु इस धरा पर उनका आगमन कल्प में एक ही बार होता है।

प्रिय वत्स हैं, उनसे तो वे प्रतिदिन अमृतवेले मिलते हैं।

यहां जागरण...अर्थात् अज्ञान से जागना। सदा जागरण अथार्त् ा् सदा स्मा त्ि ा स्वरूप रहना, वत्् र ा लन्े ा अर्थात् दृढ़ संकल्प करना व अक के फूल चढ़ाना अथार्त् ा ाश्ि ाव परमाप्ि ाता पर अपनी बरु ाइयों को आप्ि ार्त् ा करना है।

प्रश्नः हमने सुना है कि शिव भांग पीते व धतूरा खाते थे। उन्हें कामारि भी कहा जाता है, उन्हें सदा ध्यान मग्न भी दिखाया जाता है। जब उन्होंने काम को भष्म कर दिया था तो उनके बच्चे कैसे पैदा हुए? फिर शिव तो सबके पिता हैं, उनके दो पुत्र ही क्यों? क्या हम शिव के पुत्र नहीं है?

उत्तरः आपने बड़ा ही गुटं ा प्रश्न पूछा है। वास्तव

उनकी देह पर विभिन्न वस्तुओं का दिखाया जाना आध्यात्मिक मर्म लिए हुए है। ध्यान दें - जिन्होंने विकारों रूपी विषधरों को अपने गले की माला बना लिया अर्थात् विकारों को वश कर लिया, जिनका चित्त चन्द्र की तरह शीतल हो गया, जिनकी बुद्धि से निरंतर ज्ञान की गंगा बहती रही अर्थात् जो

ज्ञान स्वरूप हो गये, वे ही महान तपस्वी बने। इसलिए ग्यारह रूद्रों का गायन है, वे निरंतर अशरीरी बन गये, इसलिए उन्हें नग्न दिखाते हैं, वे ज्ञान डांस करने लगे, अतीन्द्रिय सुख में झूमने लगे, तीनों काल व तीनों लोकों के ज्ञाता बन गये, इसलिए उन्हें डमरू व

त्रिशूल दिया है। तो, ये ब्रह्मा-वत्सों की बाप समान स्थिति का प्रतीक है।

ण्दहूम्ू ा-र्ीग्त् - ़्व्ेल्र्ब्ी8@ब्ीप्दद.म्दस्

ओम शान्ति मीडिया फरवरी-घ्, 2016

बहुत ही सहज है राजयोग...

कभी-कभी आप कम्पयूटर पर काम करते हैं तो उस समय आप अन्दर से कोई फोल्डर या फाईल पर काम करते हैं ना कि अलग से टाईप करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे संस्कारों में बहुत सारे पुराने फोल्डर्स वा फाईल्स (पुरानी आदतें, यादें, भूतकाल की बातें, दुःख देने वाली बातें आदि-आदि) पड़े हुए हैं जो बीच-बीच में मन रूपी पर्दे पर आते रहते हैं। इसलिए आप कभी बहुत खुश होते हैं पुरानी बातें याद करके और कभी बहुत दुःखी होते हैं। जैसे कम्पयूटर में कोई फोल्डर को सर्च करने के लिए एक संकेत (क्ल्यू) का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जब भी हम किसी भी व्यक्ति को देखते हैं जो बीस साल पहले मिला हो उसी समय उससे सम्बन्धित सभी पुरानी बातें याद आ जाती हैं।

झालावाड़-राज.। कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट एवं कांग्रेस उपाध्यक्ष प्रमोद जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना।

दूसरा ः पूर्व जन्मों के संस्कार - कई बार आप नवजात बच्चे को अलग-अलग हरकतें करते हुए देखते हैं। कई बार वो अपने आप हँसने लग जाता है या फिर रोने लग जाता

संग, साथ में इन्टरनेट, फेसबुक, वॉट्सऐप के कारण आज बच्चों का मानास्ि ाक सन्तल्ु ान बिगड़ गया है। आज वो सब कुछ

देखते हैं और वैसा ही व्यवहार करते हैं।

मत कर लो, बेटा वहाँ जा रहा है तो मार खाकर मत आना, मार के आना। इसके अलावा कुछ मान्यतायें भी हैं जैसे सुबह- सुबह खाली बाल्टी देखना, कहते हैं आज

है, तो मान्यता यह है कि बच्चे भगवान का

चाथ्ै ा सस्ं कारः ज्ञ ाबरदस्ती बदले हुए

सस्ं कार

काम नहीं होगा, बिल्ली रास्ता काट जाये

रूप हैं और भगवान जी बीच-बीच में इन्हें हँसाते और रूलाते हैं। जबकि यह हमारे पूर्वजन्मों के संस्कार हैं जो बीच-बीच में जागृत हो जाते हैं। पैदा होने के बाद इस जन्म में आपने जो कुछ भी किया है, अगले जन्म में उसका प्रभाव बीच-बीच में दिखाई दे जाता है। इसका उदाहरण है कि कई माँ- बाप बहुत सीधे और सज्जन होते हैं लेकिन उनके बच्चों के संस्कार बहुत अलग होते हैं। यदि चार बच्चे हैं तो चारों के अलग-

अलग संस्कार हैं।

तीसरा ः वातावरण के संस्कार - आज हमारा वातावरण पूर्णतया दूषित हो चुका है। जो भी बाहर कुछ नया दिखाई देता है उसका प्रभाव बच्चों पर तुरन्त पड़ता है। माता-पिता की शिकायत भी होती है कि पहले हमारा बच्चा ऐसा नहीं था। अभी

(विलपॉवर) - इस संस्कार को थोड़ा ध्यान

से समझने की ०जरूरत है। कुछ लोग कहते हैं कि विलपॉवर तो अच्छी ची०ज है, लेकिन विलपॉवर नकारात्मक रूप से भी तो काम करती है। जिस प्रकार आज तक हम बहुत सारी बातें कहते आए लेकिन उसका गलत प्रभाव हमारे उपर पड़ता है, इसको हमने नहीं समझा। जैसे झूठ बोले बिना काम नहीं

तो कहते हैं आज काम नहीं होगा। अब आप बताओ कि बिल्ली को पता है कि आप अभी निकलने वाले हैं और मुझे रास्ता काटना है। कितनी अजीब बात हैं ना! ये सारे संस्कार हमने ०जबरदस्ती बदले हैं और आज वो ना चाहते हुए भी हो जाता है क्योंकि वो संस्कार में है। क्या आप

चौबीस घंटे गुस्सा कर सकते हैं? शायद नहीं! हाँ चौबीस घंटे आप शांत ०जरूर रह सकते हैं।

इसके अलावा कई बच्चे बार-बार अपने ाल्ि ाए कहते , मैं तो डम्प हूँ, डलहेड हूँ या पागल हूँ या मूर्ख हूँ आदि-आदि शब्द इस्तेमाल करते हैं। यह संस्कार उनका पक्का होता जाता है और एक दिन उनको सभी उसी न०जर से देखने लग जाते हैं। आप सबसे हमारा ये विन्रम अनुरोध है कि आप अपने

दिल्ली-ओम विहार(उत्तर नगर)। हाई टेक कार मास्टर्स,टाटा मोटर्स में मानसून कैम्प का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं टाटा मोटर्स के जी.एम. बलप्रीत सिंह व अन्य।

बरवाला-हरियाणा। `रोड सेफ्टी मिशन' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में एस.डी.एम. अटकन जी को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. इंदिरा।

वातावरण के कारण बिगड़ गया है। वाता-

चलता, गुस्सा किए बिना काम नहीं चलता,

बारे में अच्छा-r अच्छी बातें बाल्े ा,ें

ाज्ि ासे आ-

वरण का मतलब यह है कि उसके दोस्तों का संग, सहकर्मियों का संग, पड़ोसियों का

आजकल थोड़ा चालाक होना ़जरूरी है, एकदम आँख मूंद कर किसी पर विश्वास

पको भी सुख मिले और दूसरों को भी।

मेरठ। शांति पब्लिक स्कूल में `7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. मोना, शिक्षकगण व छात्र-छात्राएं।

शिव को याद करो और उनके नामों व गुणों से पहेली को हल करो

उपर से नीचे

अबोहर-पंजाब। नये वर्ष के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्र.कु. पुष्पलता, ब्र.कु. सुनीता, शकुंतला सोनी, डॉ. कंचन खुराना, श्याम सुंदर सचदेवा, बलराम सिंगला, डॉ. राजिन्द्र मित्तल व डॉ. आकाश खुराना।

2. शिव राम के भी ईश्वर....हैं। 9. शिव सारे विश्व के

3. शिव का एक नाम....भी है। नाथ....हैं।

4. शिव ज्ञान का सोमरस 10. शिव ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के

1. शिव का कोई शारीरिक आकार नहीं है, इसलिए उन्हें....कहते हैं।

वाला....है।

12. शिव मुक्ति देने वाला....है।

13. शिव, हम आत्माओं की

पिलाने वाला....है।

रचयिता होने के कारण....शिव

6. शिव....नाथ हैं क्योंकि जन्म-

बीमारी दूर करने वाला....है।

5. शिव को कभी काल नहीं कहलाते हैं।

खाता, इसलिए....भी कहते हैं। 11. शिव पत्थरबुद्धि आत्माओं

6. शिव....हैं, कभी जन्म नहीं कोपारसबुद्धिबनाने

मरण रहित हैं।

7. शिव कालों के काल....हैं।

8. ....का अर्थ है कल्याणकारी।

14. शिव को....भी कहते हैं।

15. बाबा कांटों को फूल बनाने वाला....नाथ है।

रायागडा-ओडिशा। `किसान सशक्तिकरण अभियान' के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करते हुए सुभाष चन्द्र बिसवाल,डिप्युटी डायरेक्टर,एग्रीकल्चरल डिपार्टमेंट। साथ हैं ब्र.कु. श्रीमती, अबनति साहू,सी.डी.पी.ओ., अंतर्यामी

लेते।

वाले....नाथ हैं।

11. शिव हमारे पापों को काटने

- ब्र.कु.पायल,बोरीवली लोखंडवाला

नायक,डायरेक्टर,रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीटयूट व ब्र.कु. अश्विनी।

खुशनुमा जीवन का पैगाम आपके नाम

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी के साथ संतोष

यादव, ओमप्रकाश यादव, ब्र.कु. रतन, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. मनोरमा, ब्र.कु. सुरेश व अन्य। श्रीकृष्ण की पोशाक में 359 बच्चों के साथ ब्र.कु. दीपक हरके व ब्र.कु. बहन।

नारनाल्ै ा। परमात्मा द्वारा दी गई ाश्ि ाक्षा

से जीवन को खुशनुमा बनाना बहुत सहज है। परमात्मा हमें आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न बनाकर श्रेष्ठ कर्म करना सिखाता है। उक्त उद्गार पुलिस लाईन ग्राउण्ड में `खुशनुमा जीवन का पैगाम-आपके नाम' विषय पर आयोजित विशाल कार्यक्रम में

को और परमपिता परमात्मा को पहचानना ॰जरूरी है।

इस कायर्् ा्र म में ाव्ि ाशष्े ा आकषर्ण् ा के केन्द्र थे 359 नन्हें `श्रीकृष्ण'। हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित

`गीता जयंती महोत्सव' के अवसर पर ब्रह्माकुमारी॰ज के प्रयासों से नारनौल में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में

वह परमात्मा हमें इतना सम्पन्न बना देगा कि किसी ची॰ज की कमी नहीं रहेगी। उन्होंने सभी को राजयोग के अभ्यास द्वारा शांति की अनुभूति कराई।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए हरियाणा विधानसभा की डिप्युटी स्पाव्r ार सत्ं ाष्े ा यादव ने कहा ाव्ि ा जाव्r ान

आकर हमें आशीर्वाद देते रहें। उन्होंने ब्रह्माकुमारी॰ज द्वारा समाज उत्थान में योगदान की सराहना करते हुए कहा कि ये बड़ी लगन से और निःस्वार्थ भावना के साथ लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं। विशेषतः महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में तो इनका योगदान काबिले तारीफ है।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका

श्रीकृष्ण के ड्रेस में बच्चे एकत्रित हुए।

को खुशनुमा बनाने की कला सिखाने

फरादr

ाबाद से आयीं ब.्र कु . उषा ने सभी

दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किये। उन्हान्ें ं ो कहा ाव्ि ा वतर्म् ान समय में मानव अपने जीवन में तनाव और परेशानियों से बहुत दुःखी व निराश है। ऐसे समय में खुद को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करें तो स्वयं में दिव्य शक्ति भरेगी जिससे जीवन में खुशहाली की नई राह मिल सकती है। इसलिए स्वयं

नारनौल और आसपास के कस्बों और गांवों से श्रीकृष्ण की ड्रेस में एकत्रित हुए 359 बच्चे मानों सभा में उपस्थित लगभग 6000

लोगों को जीवन का आनंद लेने के लिए प्रेरित कर रहे थे। मुम्बई से आये जीवन प्रबंधन ट्रेनर स्वामान्र ाथन ने सभी को जाव्र ान में खश्ु ा रहने के लिए तन और मन दोनों को

स्वस्थ और सशक्त बनाने की टिप्स दिये। इलाहाबाद से आयीं ब्र.कु. मनोरमा ने जीवन में खुशहाली के लिए दूसरों को देखने के बजाय स्वयं को देखने की सीख देते हुए कहा कि स्वयं को सुखी रखने के लिए अपने अंदर छिपी हुई शक्तियों को जागृत करें तो

का कार्य तो यह महान और पवित्र आत्मायें ही कर सकती हैं। मैं मानती हूँ कि अपने विचारों को शुद्ध बनाकर ही हम खुश रह सकते हैं, तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

विधायक ओमप्रकाश यादव ने दादी रतनमोहिनी जी का धन्यवाद करते हुए अनुरोध किया कि हर वर्ष नारनौल

का स्वागत किया तथा ब्र.कु. रतन दीदी ने मेहमानों को ईश्वरीय सौगात तथा प्रसाद देकर सम्मानित किया। माउण्ट आबू से आये ब.्र कु . सरु श्े ा शर्मा ने बड़े ही सुंदर ढंग से मंच संचालन किया।

नैतिक मूल्यों के आधार से करें व्यापार

हेल्थ-वेल्थ-हैप्पीनेस फेस्टीवल का आयोजन

दिल्ली-रजौरी गार्डन। ब्रह्माकुमारी

ईश्वरीय विश्वविद्यालय के रजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र के सौजन्य से एक 5

ादि

वसाय्र ा आध्यात्ि मक मल्े ो का आयाज्े ान

कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. शिवानी व ब्र.कु. पुष्पा का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए सतपाल गिरधर।

किया गया। इस मेले का उद्घाटन ब्रह्माकुमारी०ज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, दिल्ली ०जोन की इंचार्ज राजयोगिनी दादी रूक्मणि व 360 गाँवों की खाप के अध्यक्ष चौधरी राम करन जी ने रिबन काटकर व दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात् दादी

मेले का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं दादी रूक्मणि, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. सुदेश,जर्मनी, ब्र.कु. जवाहर व अन्य भाई बहनें।

दिल्ली-पाण्डव भवन। व्यवसाय का

ादि

ल्ली स्कू टर्स टड्रे

र्स एसा स्ि ाएशन

हृदयमोहिनी ने पूरे मेले के हर स्टॉल

उद्देश्य है खुशी अनुभव करना। परन्तु हम उस खुशी को तब अनुभव कर सकेंगे जब हमारा मन शांत और स्थिर होगा और हम नैतिक मूल्यों के आधार

के प्रे॰जीडेंट रवि अजय हंस, वाईस प्रे॰जीडेंट सुरिन्दर कुमार वलेचा व आशा वलेचा, जनरल सेक्रेट्री दीपक सचदेवा, एडवाइ॰जरी बोर्ड मेम्बर

पर जाकर अवलोकन किया तथा मेले के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। उन्होंने मेले की सफलता हेतु शुभकामना संदेश में कहा कि यह मेला

पर व्यापार करग्े ं ा।े

उवत्ो ा उदग्् ार ादि

ल्ली

लोकेश नारंग, मुल्तान बिरादरी के

ह॰जारों आत्माओं को हेल्थ-वेल्थ और

स्कू टर्स टड्ेर

र्स एसा स्ि ाएशन कराल्े ा बाग

प्रे॰जीडेंट अशोक गेरा तथा वाईस

हैप्पीनेस देकर उनका कल्याण करेगा।

के व्यापारियों के लिए आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

करोल बाग सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका ब्र.कु. पुष्पा ने सभी को सुखमय जीवन व्यतीत करने की कला बताई।

प्रे॰जीडेंट सतपाल गिरधर ने ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. पुष्पा का स्वागत करते हुए शॉल पहनाकर सम्मानित किया। तत्पश्चात्

एसोसिएशन के प्रमुख सदस्यों को ब्र.कु. शिवानी ने शॉल पहनाया तथा ब्र.कु. पुष्पा ने ईश्वरीय सौगात भेंट की।

चौधरी राम करन जी ने कहा कि मेरा

सौभाग्य है जो मैं दादी जी के साथ उद्घाटन सत्र में शामिल हुआ।

इस मेले का कई विशिष्ट अतिथियों जैसे सुरेन्द्र सिंह सोलंकी मटियाले वाले, विधायक विजेन्द्र गर्ग, साथ ही कई एन.जी.ओ. के संस्थापकगणों ने

भी सपरिवार इस मेले का लाभ लिया। इन संस्थाओं के अतिरिक्त दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों से लगभग 500 से

भी अधिक छात्र-छात्राओं, शिक्षकों प्रधानाचार्यों ने इस मेले का अवलोकन किया व इसकी जानकारी ली।